National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 2; Issue 2; May 2017; Page No. 211-213

रूद्र प्रयाग की संस्कृति, त्योहार और पर्यटन का तार्किक अध्ययन

[1] कुलदीप आजाद नेगी, [2] प्रो. धीरेन्द्र पाठक

[1] शोध छात्र, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] शोध निर्देशक, प्रोफेसर, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
हिमालय के ऊँचे शिखर, नदियां, झरने, सर्पाकार सड़कें, घने चीड़ और देवदार के जंगल, फूलों की घाटी, मनलुभावन झीलों के किनारे और हर पहाड़ पर पवित्र मंदिर है। उत्तराखंड को कई धार्मिक स्थानों और पूजन स्थलों के कारण को 'देव भूमि' या 'भगवान की भूमि' भी कहा जाता है। इसे भक्ति और तीर्थयात्रा के लिए सबसे पवित्र और अनुकूल स्थान माना जाता है। उत्तराखंड में पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं, चाहे वो प्रकृति, वन्यजीवन, सहासिक पयर्टन या तीर्थ स्थल कुछ भी क्यों ना हो। यहां के प्रमुख स्थानों में हरिद्वार, ऋषिकेश, देहरादून, मसूरी, अल्मोड़ा, केदारनाथ, बद्रीनाथ, यमुनोत्री, गंगोत्री, जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क नैनीताल, रानीखेत पिथौरागढ और रुद्रप्रयाग़ हैं। यदि आपको सहासिक पयर्टन पसंद है और कुछ कठिन चुनौतियां लेना चाहते हैं तो आप ऊँचे या छोटे पहाडी अभियानों की ट्रेकिंग, रिवर राफ्टिंग, पैरा ग्लाइडिंग, हेंग ग्लाइडिंग, पर्वतारोहण, स्कीइंग या दूसरी कई गतिविधियां कर सकते हैं।

मूल शब्द : प्रयाग, संस्कृति, फूलों की घाटी, नदियां, झरने, सर्पाकार सड़क

प्रस्तावना : रुद्रप्रयाग

रुद्रप्रयाग जिला भारत के उत्तराखण्ड राज्य के गढ़वाल का एक जिला है। इस जिले का कुल क्षेत्रफल 2,439 वर्ग कि.मी. हैं। रुद्रप्रयाग कस्बे में इस जिले का प्रशासनिक मुख्यालय स्थित है। यह जिला उत्तर में उत्तरकाशी जिले, पूर्व में चमोली जिले, दक्षिण में पौड़ी जिले और दक्षिण में टिहरी जिले से घिरा हुआ है।[1] रुद्रप्रयाग अलकनंदा तथा मंदाकिनी नदियों का संगमस्थल है। यहाँ से अलकनंदा देवप्रयाग में जाकर भागीरथी से मिलती है तथा गंगा नदी का निर्माण करती है। प्रसिद्ध धर्मस्थल केदारनाथ धाम रुद्रप्रयाग से 86 किलोमीटर दूर है। प्रमुख धार्मिक आकर्षण– अगस्त्यमुनि, गुप्तकाशी, गौरीकुंड, दिओरिया ताल, केदारनाथ है।
रुद्रप्रयाग जनपद की स्थापना 16 सितंबर 1997 को हुई थी।[2] जनपद का निर्माण चमोली जिले के अगस्त्यमुनि व उखीमठ विकासखण्ड पूरी तरह से तथा पोखरी और कर्णप्रयाग विकासखण्ड का कुछ हिस्सा, टिहरी जनपद के जखोली तथा कीर्तिनगर विकासखण्ड का कुछ हिस्सा तथा पौड़ी जनपद से खिर्सू विकासखण्ड का कुछ हिस्सा लेकर किया गया।

मेले और त्यौहार

रुद्रप्रयाग उत्तराखंड के गढवाल क्षेत्र का एक जिला हैं यह पूर्ण रूप से पहाड़ी क्षेत्र हैं। यह के निवासी पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करते हैं। इन क्षेत्रों की अपनी संस्कृति और परम्परा हैं जिसे यहां के समुदायों ने आज भी संजो कर रखा हैं, जिसमें मौसमी और धार्मिक लोकगीत, लोकनृत्य और कुछ विशिष्ट परम्पारिक शैलियां भी शामिल हैं।
इन्हीं धार्मिक त्यौहारों के बीच हर वर्ष मनाया जाने वाला बंसत पंचमी का त्यौहार हैं इस दिन क्षेत्र में मेले का आयोजन किया जाता। इस दिन समुदाय के लोग विशेष थाडिया नृत्य करते हैं। लोक नृत्य का कुछ ऐसा ही दृश्य दिपावली और सर्दियों के बाद महाभारत काल में पांडवों के आगमन साथ ही फसल कटाई के समय किया जाता हैं।
इसके अलावा जीतूभागदवाल, जागर और गहरयाली लोकनृत्य ये सभी लोक नृत्य पौरणिक कथाओं पर आधारित हैं। इन लोकनृत्यों में पुरुष और महिलाएं पांरपरिक पोशाकों, धुनों, नगाड़ों पर एक साथ नृत्य करते हैं। इसके साथ ही एक और पारंपारिक नृत्य जिसे मेले में चंचारी गीत के साथ महिला और पुरुष एक साथ करते हैं।
वैसें भारत के प्रत्येक ग्रामीण क्षेत्रों और कस्बों की अपनी संस्कृति और परम्परा हैं लेकिन रुदप्रयाग जिला जोकि प्रकृति की गोद में रचा बसा हैं यहां का हर मौसम गुलजार होता हैं जो झुमने गाने गुन–गुनाने को उत्साहित करता हैं और रूद्र प्रयाग जिले में खासकर महिलाओं लोकगीत गाती हैं जोकि हर मौसम के अनुसार होते हैं। इनमें से अधिकतर महिलाएं कामकाजी होती हैं जो सुबह से शाम तक कड़ा परिश्रम करती हैं।
चैत्र माह के दौरान गांव की प्रत्येक महिला समुहों में एक केंद्रीय स्थान पर एकत्रित होकर वीरता, प्रेम और जीवन संघर्ष के लोकगीत गाती हैं। इसके अलावा विशेष सावन मास में महिलाएं मिलकर खुले मंच पर भगवान शिव–पार्वती से जुड़े दृश्यों का मंचन करती हैं।
रुदप्रयाग जिले में मेलें व त्यौहार महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं इन मेलों व त्यौहारों ने आज भी विरासत को संजो कर रखा हैं और इनके आयोजन से इतिहास का पुनः चित्रण और व्याख्या संभव हो पाती हैं।

राम नवमी

9 दिन के चैत्र माह में भगवान राम का जन्मदिन मनाया जाता था। इस दौरान जिलें में भगवान राम के भक्त एकत्र होकर उपवास, रामायण पाठ और भजन करते हैं।

नाग पंचमी

रुदप्रयाग जिलें में नाग पंचमी का विशेष महत्व हैं यह त्यौहार पांच दिनों तक मनाया जाता हैं इस दौरान मंदिरों में पूजा और नाग (सांप) को दुध पिलाते और आटे और चावल का दान करते हैं।

[1] Census of India (2011)District Census Handbook Rudraprayag, www.censusindia.gov.in/2011census/dchb/0503_PART_B_DCHB_RUDRAPRAYAG.pdf
[2] Census of India (2011)District Census Handbook Rudraprayag, www.censusindia.gov.in/2011census/dchb/0503_PART_B_DCHB_RUDRAPRAYAG.pdf

रक्षा बंधन

रक्षा बंधन यूँ तो पूरे देश में मनाया जाता हैं लेकिन रूद प्रयाग जिले में खासतौर पर मनाया जाता हैं। इस दिन बहन अपने भाई के हाथ पर रक्षा सूत्र बांधती हैं और भाई अपनी बहन उपहार व रक्षा करने का प्रण लेता हैं।

जन्माष्टमी

यहां धार्मिक त्यौहार भद्रा के आठवें दिन पड़ता हैं। इस दिन भगवान कृष्ण का जन्म हुआ था। भक्त मंदिरों पूजा और जन्म उत्सव मनाते हैं जिसमें जिले भर के लोग शामिल होते हैं यहां उत्सव रात भर चलता हैं। इस विशेष दिन मंदिरों में भगवान कृष्ण की झांकियां और उनकी लीलाओं का मंचन किया जाता हैं। रूद प्रयाग जिले के प्रत्येक मंदिरों और घरों में यह उत्सव मनाया जाता हैं। इसके साथ ही त्यौहार नागनाथ, बद्रीनाथ और केदानाथ में मनाया जाता हैं।

दशहरा

अश्विन शुक्ल पक्ष में नौ दिन दुर्गा उत्सव के बाद दसवें दिन दशहरा मनाया जाता हैं। यह पर्व अधर्म के खिलाफ धर्म की विजय के लिए मनाया जाता हैं इसी दिन भगवान राम ने रावण का वध किया था। इस उत्सव का विशेष आयोजन जिले के कालीमठ सहित विभिन्न स्थानों पर किया जाता हैं।

दीपावली

दीपो के त्यौहार दीपावली को पूरे जिले भर में मनाया जाता है। यह उत्सव कार्तिक मास में मनाया जाता हैं जो कि पांच दिनों तक मनाया जाता हैं। पहले दिन धनतेरस को माता लक्ष्मी की पूजा की जाती हैं। दीपवाली के दिन भगवान गणेश, मां सरस्वती और लक्ष्मी की पूजा की जाती हैं। इस दौरान लोग लोग अपने घरों के सजाते–सवारतें तथा घरों में मिठाईया बनाई जाती हैं। दीपावली के दिन ही भारतीय वित्तीय वर्ष की शुरूवात होती है इसलिए भी यह त्यौहार मनाया जाता हैं। इस उत्सव के दौरान भी रूदप्रयाग जिले में मेले और लोकनृत्य तथा लोकगीत का आयोजन किया जाता हैं।

मकरसंक्राति

ऐसे ही मकर संक्राति का त्यौहार जिले में 13 और 14 जनवरी को मनाया जाता हैं। इस दिन लोग सुर्य मकर राशि से उत्तरानरायन में प्रवेश करता हैं। इस दिन का विशेष महत्व भी होता हैं श्रृद्धालू इस दिन कर्णप्रयाग और नंदप्रयाग के अलखनंदा नदी में डूबकी लगाते हैं।

शिवरात्रि

रुदप्रयाग को शिवनगरी भी कहा जाता हैं फाल्गुन मास के 14वें दिन शिवरात्रि मनाई जाती हैं। इस दिन भगवान शिव की पूरे जिले में पूजा की जाती है मंदिरों सुबह से ही भक्तों की भीड़ लगना शुरू हो जाती है शाम को भगवान का श्रृंगार किया जाता है। इसके साथ ही विशेष रूप से जिले के बेराकुंड, गोपेश्वर और नागनाथ मंदिरों में मेलों का आयोजन किया जाता हैं।

होली

भारतीय समाज में जिस तरह से दीपावली दशहरे को एक उत्साह की तरह मनाया जाता है उसी तरह से होली का भी विशेष रूप से उत्सव के रूप में मनाया जाता हैं। खासतौर पर रुदप्रयाग जिले में होली का विशेष महत्व हैं। इस त्यौहार को फाल्गुन की पूर्णिमा को मनाया जाता हैं। जिले में इस त्यौहार के पहले रात्रि को फाल्गुन फाग के गीत गाए जाते हैं। इस दौरान पूर्णिमा के पहले एकादशी को गांव के हर चौपाल– चौराहो को संजाया जाता हैं और पूर्णिमा के दिन महिलाएं पूजा करती है और फिर होली जलाई जाती हैं जिसकी राख को माथे पर लगाया जाता हैं। फिर अगले दिन लोग आपस में रंग लगाते एक दूसरे पर पानी उड़ते, लोक नृत्य और लोक गीत गाते।

विश्वसक्रांति

वैसें तो रूद प्रयाग जिले में कई मेले और त्यौहारों का आयोजन किया जाता हैं लेकिन हर वर्ष 13 अप्रैल को विश्वसक्रांति के अवसर पर जिले में बड़े मेले का आयोजन होता हैं। इस मेले का उल्लेख पांडूकेश्वरी और ललिताश्वरदेवा की शिलालेख में उल्लेख हैं। यह मिंग (14 अप्रैल), असर (15 अप्रैल), हंस कोटि (16 अप्रैल), कुलशारी और अदवारी को (17 अप्रैल) को आयोजित किया जाता हैं। रुद्रप्रयाग जिले एक और महत्वपूर्ण मेला गोचर जो कर्णप्रयोग में हर वर्ष नवंबर में आयोजित किया जाता हैं जिसमें बड़ी संख्या में जिले के लोग शामिल होते हैं।

आवास

रुद्रप्रयाग जिले में बने आवास की बात की जाए तो यहां की बसाहट किसी टाउन प्लानिंग के मुताबिक नहीं हैं। इसकी एक बड़ी वहज पहाड़ी क्षेत्र होना भी हैं। यहां अधिकतर निवासी झरने और नदी के किनारे निवास करते हैं। अधिकतर घरों का निर्माण आज भी पारम्पारिक रूप से पत्थरों से किया गया हैं जो दो मंजिल, तीन मंजिल और 5 मंजिल हैं इन घरों के कमरे बेहद छोटे होते हैं जो कि सामान्यत 1–8 मीटर के होते हैं। हर के सामने का हिस्सा पशु आवास के लिए इस्तेमाल किया जाता हैं। जिसे चौक या आंगन कहा जाता हैं। इन घरो की खास बात यह है कि इनकी छत्तें आज भी लकड़ी या मिट्टी से बनाई जाती हैं। आवास के तलों पर पहुंचने वाली सीढियां या तो पत्थर या फिर लकड़ी की होती हैं। ऊपरी मंजिल की ऊंचाई आमतौर पर 2–1 मीटर होती हैं और आवास का अंतिम तल नालीदार चादर लोहे और जस्ते की होती हैं। आमतौर पर ऊपरी मंजिल के सामने एक बरामदा होता हैं।

रुदप्रयाग जिले के कुछ उच्चे स्थानों पर बने आवास दो या तीन मंजिला होते है इन आवासों की खास बात यह है कि इनमें मुख्यत बालकनी होती है जिससे बाहर का पूरा नजारा दिखता हैं साथ ही आवास के सामने आंगन होता है जिसका अधिकतर उपयोग पशु पालन के लिए किया जाता हैं। कुछ आवासों को देखें तो वो 5 से 6 मंजिला होते हैं जिनका अंतिम तले को रसोई के लिए इस्तेमाल किया जाता हैं। कई जगह आवास से दूर पशुओं के आवास की व्यवस्था रहती हैं इस स्थान पर बड़ी संख्या में पशुपालन किया जाता हैं।

आभूषण

भारतीय महिला की तरह रूद प्रयाग जिले की महिलाए भी श्रृंगार को प्राथमिकता देती हैं। जिले में रहने वाली महिलाओं के आभूषण लगभग अन्य राज्यों की महिलाओं की तरह के होते है लेकिन इनके डिजीइन यहाँ की संस्कृति और परंपरा को दर्शाते हैं। यहां की महिलाएं हिंदू रीति रिवाजों के मुताबिक विवाहित महिलाएं पैरों में बिछ्वा (पैरों में चांदी की रिंग), नाक में नथ (नाक की रिंग), गले में पहने जाने वाला चंदन हार (नेकलेस) और पैरों में पायल पहनती हैं। इसके अलावा स्थानीय अभूषणों में महिलाएं व लड़किया हाथ में चूडिया पहनती हैं साथ ही यहां हाथ दांत से बने आभूषण पहने जाते है। जिले के पुरुष हाथों में छल्ले और गले में सोने की चेन पहनते हैं।

भोजन

रुदप्रयाग जिले में भोजन की खासी परेशानी नहीं हैं यह के निवासी मुख्यतः यहाँ उत्पादित भोजन करते हैं। अनाज में गेंहू, चावल, मंडउवा, जनजोरा मुख्य आहार हैं। जिले में उड़द, गाहत, सोंटा, अरहर, लोबिया और मसूर की दाल खाई जाती हैं। जिले में निवास करने वाले हिंदू सामान्यत शाकाहरी होते है वही मुस्लिम, सिख और इसाई समुदाय के लोग मांसाहारी होते हैं। मांस मंहगा होने के कारण ये लोग रोजाना मांस का सेवन नहीं करते हैं। ऐसे में यहां स्थानीय शाकाहारी भोजन को प्राथमिकता देते हैं।

पोशाक

जिले में स्थनीय निवासियों द्वारा पहने जाने वाली पोशाके बेहद सामान्य है जो कि क्षेत्र की आर्थिक स्थिति और पर्वतीय वातावरण को दर्शाती हैं। जिले के पुरुष गर्म मौसम में सामान्यत कुर्ता और ढीली–ढाली शर्ट पहनते हैं इसके साथ ही वह आमतौर पर पायजामा पहनते है जोकि नीचे की ओर से टाईट होता हैं। वहीं सर्दी के दिनों में यह सदरी (जेकेट), कोर्ट और सर पर टोपी पहनी जाती है। यह टोपी कोर्ट के कपड़े की बनी होती जोकि ठंड से शरीर को बचाती हैं। इसके अलावा वर्तमान समय में देखा जाए तो क्षेत्र में युवा वर्ग से लेकर अधिक उम्र के लोगों के बीच में ट्राऊजर और साथ में बटन बंध कोर्ट पहनने का चलन बढ़ा हैं।

जिले में महिलाओं के पहनावे को देखें तो महिलाएं अक्सर साड़ी और सिलीविड शर्ट साथ ही शोर्ट जेकेट पहनती हैं। इसके अलावा महिलाएं सर्दी के दिनों शर्ट की जगह ऊन के बनें जेकेट पहनती हैं। इसके अलावा छात्राएं सामान्यत गुठने तक लंबाई के कुर्ता, कमीज, नेरो पजामा और दुपट्टा पहनती हैं, साथ ही वह सर से कंधो तक ढंकनेवाला स्कॉफ ओढती हैं। इसके अलावा रूद प्रयाग जिले में ऊंचे स्थानों पर रहने वाले लोग सामान्यत ऊनी कपड़े पहने हुए रहते हैं। यहाँ पुरुष पजामा, शर्ट, कोर्ट और टोपी पहनते हैं। महिलाएं घाघरा, लॉग फुल शर्ट और स्कॉफ और शॉल पहनती हैं। साथ ही महिलाएं और पुरुष लॉग कोटन कपड़े, कमरबंध, शर्ट, कोर्ट और ओढनी (स्कॉफ) पहनते हैं।

उपसंहार

रुद्रप्रयाग परम्पराओं में भारत की विवधता को समेटे हुए है. धार्मिक त्यौहार यहाँ की परम्परा में रचा बसा है. त्योहार के साथ लोक नृत्य का प्रगाढ़ सम्बन्ध है. दीपावली के त्योहार और फसलो की कटाई बुआई के समय लोक नृत्य प्रमुख स्थान रखते हैं. थाडिया, जीतुभागढवाल, जागर और गहरयाली प्रमुख लोक नृत्य हैं. पर्वतीय जिला होने के कारण यहाँ पर विवधता अधिक दिखायी पड़ती है पर यहाँ के परम्पराओं, त्योहार, और संस्कृति ने एक रुपी संस्कृति का विकास किया है. पर्यटन की दृष्टी से यहाँ के त्योहार, लोक गीत और लोक नृत्य, आवासीय रचना बहुत ही महत्व का स्थान रखते हैं.

सन्दर्भ

1. Adrian Franklin. Tourism an Introduction, Sage Publication: London, 2003.
2. Bist Harshwanti. Tourism in Garhwal Himalaya, 1994; 47-89.
3. Bob Mckercher, Hillary du Cross. Tourism: The Partnership between Tourism and Cultural Heritage Management, Routledge, 2012.
4. Census of India. District Census Handbook Rudraprayag, www.censusindia.gov.in/2011census/dchb/0503_PART_B_DCHB_RUDRAPRAYAG.pdf, 2011.
5. Jonathan Mitchell, Caroline Ashley. Tourism and Poverty Reduction: Pathways to Prosperity, Earthscan: London, 2010.
6. Khajuria Sandev. Tourism Risks and Crimes at pilgrimage Destinations: A Case Study of Shri Mata Vaishno Devi, IJEMR, 2014; 8(8):77-93.
7. Martin Mowforth, Ian Munt. Tourism and Sustainability, Routledge: New York, 1998.
8. Maureen Moynagh. Political Tourism and Its Texts, University of Toronto Press: Toronto, 2008.
9. Melanie K Smith. Issues in Cultural Tourism Studies Psychology Press, 2003.
10. Philip L Pearce. Tourist Behaviour, Channel View Publications: Toronto, 2009.
11. SK Gupta. Economic Impact of Vaishnao Devi Pilgrimage: An Analytical Study, IJHTS, 2015.
12. Sharma Rajni *et al.* Impact of peace and Disturbances on Tourism and horticulture in Jammu and Kashmir, IJSRP, 2012; 2(6).
13. Susan Pitchford. Identity Tourism: Imaging and Imagining the Nation, Emerald: WA, Sustainability, 2008.
14. Tim Knowles *et al.* The Globalization of Tourism and Hospitality: A Strategic Perspective, Thomson: London, 2004.
15. UTDC. Published Report. Uttarakhand Tourism Development Corporation. 2015.
16. Vasanti Gupta. Sustainable Tourism: Learning from Indian Religious Traditions.